आईआईएम का बिजनेस कॉन्क्लेव स्पीकर्स ने पर रखी अपनी बात

कोई भी काम छोटा नहीं है, यूथ छोटे काम से शुरुआत कर बड़े प्रोजेक्ट पर काम कर सकते हैं

Business Conclave

सिटी रिपोर्टर | रांची

किसी भी प्रोजेक्ट को छोटा नहीं समझना चाहिए। हर काम हमें कुछ न कुछ सिखाता है। हर छोटा काम हमें बड़े प्रोजेक्ट के लिए सक्षम बनाता है। ये बातें बालाजी रंगनाथन, वाइस प्रेसिडेंट, कॉरपोरेट ऑडिट, फिडेलिटी इंवेस्टमेंट ने कही। मौका था आईआईएम रांची की ओर से आयोजित 'बिजनेस कॉन्क्लेव : रैडिक्स 5.0' का। इसका विषय 'इंब्रेसिंग व्यूका' रखा गया है। इसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान समय में व्यूका को अपनाने की जरूरत को बताना था। व्यूका जो वोलाटिलिटी अनसर्टेनिटी, कॉम्प्लेक्सिटी और एंबीगुइटी को बताता है। इसके अनुसार कंपनियों को बदलाव के हिसाब से खुद को बदलने की जरूरत है। इसमें देश की कई बड़ी कंपनियों से स्पीकर्स रांची आए।

स्पीकर्स ने व्यूका कॉन्सेप्ट के बारे में और उसकी जरूरत के बारे में बताया। स्पीकर्स के रूप में वाइस प्रेसिडेंट कॉरपोरेट ऑडिट फिडेलिटी इंवेस्टमेंट बालाजी रंगनाथन, एक्सेंचर वाइस प्रेसिडेंट आनंद कुमार शर्मा, कोलिन लर्निंग- हार्पर कॉलिन्स मैनेजिंग डायरेक्टर चैताली मोइत्रा, जीई पावर जीएम इंडिया मरियासुंदरम एंटोनी, डॉयचे बैंक सीएफओ विनय गुप्ता, सीएसआर हेड डेल ईएमसी अर्चना सहाय, आईआईएम रांची के डायरेक्टर डॉ. शैलेंद्र सिंह ने भी अपनी बातें रखीं।

कभी भी आपको कोई पीछे कर सकता है, इसलिए समय के साथ बदलाव जरूरी

आज के समय में डेटा ही करेंसी है

बालाजी रंगनाथन ने कहा कि डेटा आज की दुनिया की नई मुद्रा है। डेटा का बहुत मोल है। डेटा एक बड़ा माध्यम है, जिससे पैसा बनाया जा सकता है। डेटा व्यापार का माध्यम बन रहा है। आने वाले समय में यह और तेजी से बढ़ेगा। इसके अलावा उन्होंने वर्तमान समय के इनोवेशन का बिजनेस पर पड़ रहे प्रभाव के बारे में भी बताया। साथ ही आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, बोट्स और ब्लॉक चेन के बारे में भी विस्तार से बताया।

संगठन में एक कल्चरल चेंज जरूरी है

एक्सेंचर के वाइस प्रेसिडेंट **आनंद शर्मा** ने व्यूका के इतिहास से अवगत कराया। यूएस आर्मी वार के समय से उसकी उपज के बारे में बताया। साथ ही कहा कि अध्यात्म से ऑर्गनाइजेशन के मैनेजर कल्चर में बदलाव ला सकते हैं। वेदों और ग्रंथों की मदद से मैनेजर अपना काम बेहतर तरीके से कर सकते हैं। समय के साथ-साथ सब कुछ बदल रहा है। नए इनोवेशन हो रहे हैं, नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जा रहा है। ऐसे में संगठन में एक कल्चरल चेंज जरूरी है।

हम क्या सोचते हैं से ज्यादा कैसे सोचते हैं यह मायने रखता है

हार्पर कॉलिन्स पब्लिकेशन इंडिया की मैनेजिंग डायरेक्टर **चैताली मोइत्रा** ने संबोधित करते हुए कहा कि व्यूका सिचुएशन हम सब की जिंदगी में प्रचलित है। हम कॉरपोरेट हायरार्की में किस स्थान पर है, ये हम क्या सोचते हैं उस पर नहीं, बल्कि कैसे सोचते हैं उस पर निर्भर करता है। उन्होंने व्यूका 2.0 – विजन, अंडरस्टैंडिंग, कम्यूनिकेशन और एडेप्टेबिलिटी के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह नहीं कह सकते हैं कि आपकी जगह सुरक्षित है। कभी भी आपको कोई भी पीछे कर सकता है, इसलिए समय के साथ बदलाव जरूरी है।

Dainik Bhaskar, 25.11.2018, Pg. 1